“बाजारवाद की संस्कृति और हिंदी पत्रकारिता का भारतीय समाज पर प्रभाव”

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

डॉ० बिन्दु चौहान
सहायक प्राचार्य
हिन्दी-विभाग
सी०एम० कॉलेज, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञा :

खुशबु कुमारी
पिता– स्व० महादेव भगत
मु०– रहमगंज, दरभंगा
पो०– लालबाग, जिला– दरभंगा
पिन– 846004 (बिहार)
पैट क्रमांक– 22090180

प्रस्तावित विषय :–

“बाजारवाद की संस्कृति और हिंदी पत्रकारिता का भारतीय समाज पर प्रभाव”

प्रस्तावना :–

पत्रकारिता समाज का वो आईना है जो समाज की वस्तुस्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। पत्रकारों ने अपने कलम के प्रयोग से समाज के उत्थान के लिये जनक्रांति की उत्साह ललक जगाने का प्रयत्न किया है। आज पत्रकारिता ने समाज को जिस ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। उसका जितना भी गुणगान किया जाय कम हैं। लेकिन कुछ त्रुटियाँ भी इनका एक रूप है। आज सोशल मीडिया का प्रभाव इतना प्रबल हो गया हैं कि बाजारवाद और संस्कृति एवं हिंदी पत्रकारिता का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ मीडिया है जो सबों के सम्मुख न्याय करता है। मीडिया का तीन रूप– प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया और सोशल मीडिया है।” जो बाजारवाद, संस्कृति और समाज पर कुछ इस कदर प्रभाव छोड़ता है कि लोग दंग रह जाते हैं।

बाजारवाद पर मीडिया का प्रभाव बाजारवाद पर प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया दोनों अपना प्रभाव छोड़ा है, बाजारवाद विश्व का एक बहुत बड़ा श्रोत है। जिसे लोग जितना हो सकें बढ़ाना चाहते हैं। जब बाजारवाद की स्थिति डगमगा सी गई तब उसकी उन्नति में पत्रकारिता ने अह्म भूमिका निभाई। भारत का पहला हिंदी पत्रकारिता हिंदी अखबार उदन्त मार्तण्ड था। जिसका प्रकाशन् 30 मई 1826 को किया गया था। इसके संपादक जुगलकिशोर थे। ये अखबार हिंदी भाषा को मजबूत बनाने के लिये निकाली गई थी। पत्रकारिता ने व्यापार, राजनीति, सामाजिक सभी व्यवस्था पर प्रभाव डाला है। छोटे से लेकर बड़े सामग्री या टेक्नोलॉजी ने वस्तुओं एवं मेकअप और वस्त्रों का प्रचार–प्रसार कर बाजारवाद का तरक्की की सीमा पर खड़ा किया है। शिक्षा को भी पत्रकारिता, मीडिया और सोशल मीडिया जैसे बेवसाइट पर प्रचार–प्रसार किया ऑनलाइन क्लास

व्यवसाय का सबसे बड़ा केंद बना। कोविड के समय सोशल मीडिया ने फील्पि कार्ड, एमार्जोन और मिशो जैसे एप से लाखों करोड़ो का क्रय–विक्रय किया। घर बैठे लोगों को हर तरह की सुविधा नेटवर्किंग के द्वारा प्रदान किया। 'मीडिया लेखन' सुमित मोहन द्वारा लिखा बहुत ही चर्चित पुस्तक हैं। जिसमें बाजारवाद के दुष्प्रभाव भी बहुत ही स्पष्ट दिखाई देता है। इंटरनेट ने एक नया सूचना संसार के सम्मुख खोला है। यहाँ कामुकता और पोर्नोग्राफी के खतरे सबसे ज्यादा है। टेलीविजन ने विश्व बाजार का जो नया परिदृश्य निर्मित किया है, उसे इंटरनेट और विस्तृत कर दिया। जनसंचार के माध्यम और प्रौद्योगिकी के संदर्भ में देखें तो आज सामाचार–पत्र, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म आदि एक ही साथ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। स्वाभाविक है कि इन सबकी अच्छाई–बुराई भी एक साथ यहाँ देखने को मिलेंगी। ध्यान देने की बात यह है कि इंटरनेट पर बुराईयों को रोकने का कोई ठोस कानून अभी तक नहीं बन सका है। परिणामत: साइबर अपराध बढ़ रहे हैं। नये किस्म के अपराधों में वृद्धि हो रही है। इंटरनेट क्योंकि विश्व माध्यम है। इसलिए इसमें होने वाले अपराध कभी भी और कहीं से भी हो सकते है। लेकिन दूसरी ओर सच यह भी है कि इसमें संचार प्रौद्योगिक का क्या दोष? दोष तो प्रौद्योगिक के इस्तेमाल का है। उसे इस्तेमाल करने वाले दिमागों और हाथों का हैं। लोग यहाँ इतने बिकाऊ हो गये है। कि उसे अच्छा–बुरा कुछ समझ में नहीं आता वो व्यवसाय को बाजार में बढ़ाने के लिये। तंबाकु जैसे उत्पाद का लॉन्च करने के लिए क्रिकेट जैसे स्टेडियम में भी प्रदर्शन का माध्यम आतुर बनाया जाता हैं। जो लोगों के शरीर के लिये हानिकारक है फिर भी इसे मीडिया के जरिये लोगों को खाने–पीने के लिये लोभांवित करता है। स्त्री के शरीर को किसी भी प्रोडेक्ट के लॉन्च के लिये उसके शरीर का नग्नयता के साथ प्रदर्शन करना ये मीडिया का बहुत बड़ा दुष्प्रभाव है। आज की मीडिया की बात करू तो वो इतना बिकाऊ हो गया है। इस दौड़ में मीडिया अपनी स्वतंत्रता केवल राजनीतिक विचारधारा में ही नहीं बल्कि बाजार से भी बनाये रखे इन निष्पक्ष

सहने का पाठ पढ़ाने वाला मीडिया एकतरफा फैसले सुनाने लगा है। अब यह सर्व–शक्तिशाली होने का एहसास है या फिर बाजार के कुछ ऐसे समीकरण, जहाँ ऐसा करना मजबूरी बन चुका है।

आज भी लोग मीडिया से उम्मीद लगाकर रखते हैं कि मीडिया जरूर न्याय दिलायेगी। जो पुलिस के सताये और राजनेताओं के ठगे है वे मीडिया की ओर ही ताकते है यह मीडिया का परम दायित्व है कि उन उम्मीदों पर खरा रहे और मीडिया की तमाम आलोचना के बीच भी अगर लोगों की उम्मीद जिंदा है, तो यह बाजारवाद के दौर में मीडिया की बहुत बड़ी उपलब्धि है। संस्कृति पर मीडिया का प्रभाव इतना तीव्र गति से बढ़ा की लोकतंत्र का देखते–देखते चौथ स्तम्भ बन गया। इसमें इलेक्टॉनिक मीडिया की अहम् भूमिका रही है। रेडियो टीवी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुधीश पचौरी का 'पॉपुलर कल्चर' के विमर्श पुस्तक संस्कृति का प्रमुख प्रमाण हैं। 'पॉपुलर कल्चर' का हिंदी में निकट अनुवाद 'लोकप्रिय संस्कृति' हो सकती है। लेकिन पॉपुलर कल्चर का आशय विशिष्ट है। पाठक उसे इन टिप्पणीयों में पाएँगे। पश्चिमी समाजों में साहित्य अध्ययनों के साथ संस्कृतिक अध्ययन ज्यादा स्वीकृत हैं। कुछ वर्ष पहले हिंदी कथा मासिक 'कथादेश' में पॉपुलर कल्चर' नाम से कॉलम शुरू किया। धीरे–धीरे पाठकों ने उसे पढ़ना–सराहना शुरू कर दिया। साठ हजार करोड़ रूपय के आसपास आकलित भारतीया मनोरजंन उद्योग में दिन–रात बनने वाली भारतीय 'पॉप कल्चर' का ग्लोबल बाजार है। विश्वभर में दिन–रात बननेवाले तरह–तरह की 'पॉप कल्चर' के अनंत रूप टी०वी० आदि माध्यमों के जरिए यहाँ भी पर्याप्त है उपलब्ध रहते है। इन दिनों सभी समाज संस्कृतिक राजनीतिक दौर में हैं। नए संस्कृति अध्ययन और भी निर्णायक बनेंगे।

आज के समय में गाँव और शहर के सामाजिक–संस्कृतिक पर प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। कोई भी संस्था समाज और समूह मीडिया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता है। मीडिया का प्रभाव हर क्षेत्र में मिल सकता है। चाहे–रिती हो या नीति या फिर आधुनिक गीत–संगीत का प्रचार–

प्रसार इन सबमें मीडिया की भूमिका अहम होती है। टेलीविजन एंव फिल्मों के कलाकार रातों–रात प्रसिद्ध हो जाते है। फिल्मों का उद्देश्य होता है। अधिक–से–अधिक पैसा कमाना। पिछले कुछ वर्षों में कुछ सार्थक और समाजपयोगी संस्कृति फिल्मों का भी निर्माण हुआ है। जिनसे भारतीय ही नहीं विदेशी भी प्रभावित हुए हैं। सोशल मीडिया जैसे– प्लेटफॉर्म ने पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का परंचम लहराया है। तभी तो पश्चिमी लोग भारतीय संस्कृति से इतना प्रभावित होते है कि आये दिन अपने बच्चों को राधे–रोध बोलते सिखाते नजर आते है। आजकल कुछ ज्यादा ही भारतीय युवा वर्गों में पश्चिमी संस्कृति प्रभाव का देखने को मिलता है। मीडिया की बागडोर ऊँचे उद्यमियों ने कब्जा कर रखा है। जिससे मीडिया के विश्वसनीयता पर प्रश्न उठने शुरू हो गया है। इसका प्रभाव विज्ञापन दताओं में देखने को मिलता है। जिसका माध्यम समाचार–पत्र एवं टेलीविजन प्रसारण इसका मुख्य केंद्र है।

इस प्रकार सामाचार पत्र अपने विज्ञापनताओं के विरूद्ध कुछ छापने से बचते है। इस प्रकार कि पत्रकारिता किसी भी सामाजिक–सांस्कृतिक के लिये बहुत ही घातक होती है। जनसंचार के माध्यम को नियंत्रित करना जनता के बुद्धि पर नियंत्रित करने के समान है। मीडिया के द्वारा जानकारी तो निकती है और मनोरंजन का केंद्र भी बनता है। मीडिया को तटस्थ होना आवश्यक है। तभी तो वह राजनीतिक समाजिक आर्थिक सांस्कृतिक गतिविधियों की सही तस्वीर जनता के सामने प्रस्तुत करता है। अगर मीडिया ही गलत रास्ता अपना ले तो एक स्वस्थ लोकतंत्र की कल्पना भी नही की जा सकती है।

समाचार पत्र और टीवी एवं सिनेमा के माध्यम से पश्चिमी संस्कृति का आगमन इतना तीव्र गति से हावी हुआ कि लोग उसमें रमने लगें। जिसमें समाज में अनावश्यक फैशन अश्लीलता चोरी गुंडा–गर्दी जैसी घटनाओं में हुई। वृद्धि हुई है। जिससे हमारी संस्कृति का खंडन हो रहा है। आये दिन

सोशल क्राइम बढ़ते जा रहे है। लोगों में असभ्यता और अश्लीलता ने कुछ ज्यादा ही सोशल मीडिया के जरिये दुष्प्रभावित किया है। समाज पर मीडिया का प्रभाव : मीडिया, टेलीविजन रेडियो समाचर पत्र, पत्रिकाएँ और इंटरनेट के रूप में संचार माध्यम के द्वारा हमारे समाज को प्रभावित करता है।

मीडिया ना केवल हमरा मनोरंजन करता है और संचार के महत्तवपूर्ण ऐजेंट के रूप में कार्य करता है। बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों के समाजीकरण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिये सुमित मोहन का 'मीडिया लेखन' समाज मीडिया से प्रभावित है। बहुत चर्चित पुस्तक है। जिसमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव दिखाया गया है। सोशल मीडिया का प्रभाव किस प्रकार समाज पर पड़ रहा है। 1950 के दशक के टेलीविजन के उद्भव का पारस्पारिक अमेरिकी परिवार की रूढ़िबद्ध छवि बनाने का श्रेय दिया जाता है। जबकि लोकप्रियता संस्कृति और मीडिया के संदेश कुछ वर्षों में बदल गया है। खास कर जब परिवारिक मानदंडों की बात आती है। यह परिवारों को प्रभावित करने वाले पूर्वाग्रहों को कायम रखता है।

मेरी नजरों में शिक्षा सामाजिक और कानूनी सुधार में पहला कदम है। कई मयनों में मीडिया के साधन के रूप में काम करता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की आप मीडिया का किस प्रकार योग करता है। सामचार पत्र से लेकर काल्पनिक कहानियों तक और सभ्य समाचार से लेकर निरंतर 10–8 घंटे मीडिया में समाचार पत्र हो या रेडियों फिर टेलीविजन उससे कुछ–न–कुछ सिखते या प्राप्त करते है। यह लोग पर निर्भर करता की वो किस तरह के समाचार से कैसे प्रभावित हो रहे हैं। मीडिया को तीसरा रूप सोशल मीडिया है। जिससे बेबसाइट से जड़कर लोग बड़े–बड़े परीक्षा की तैयारियाँ का पास करते है। जिससे समाज में अच्छा प्रभाव पड़ता है। यूट्यूब, फेसबुक, इस्टाग्राम जैसे– प्लेटफॉर्म से लोग लाखों–लाखों रूपये कमा रहे है। जिनसे कुछ गरीब लोगों का लाइफस्टाइल चेंज हो रहा है।

वहीं दूसरी तरफ मीडिया कहीं–न–कहीं बिक चुकी है। राजनीतिज्ञ के हाथ जहाँ कुछ ज्यादा भावात्मक समाचर या जनक्रांतिकारी समाचार बहुत कम देखने को मिलता है। वहीं दूसरी तरफ वहीं इस दुष्प्रभाव भी देखने को मिलता है। आये दिन न्यूज में नेता एक–दूसरे से लड़ते दिखाई देते है। विज्ञापन और राजनितिक के सिवा मीडिया पर कुछ खास नहीं दिखाई देता।" जिसका नाकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ रहा है। 'तू देख तामाश टीवी का' सुधीश पचौरी का जनसंचार पुस्तक है। जिसमें टीवी उसका प्रमुख बिंदु है। उसमें दिखाई जाने वाली समाचर फिल्म, नाटक और विज्ञापन का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पर गहरा असर छोड़ा है। मीडिया का बहुत ही प्रमुख माध्यम रहा है टीवी जो सोशल मीडिया का काम तक करता था। टीवी एक ऐसा माध्मय था जो पत्रकारिता का न केवल चेहरा बदला है, बल्कि पत्रकारिता के नियम तक को बदल दिया। पत्रकारिता और टेलीविजन, टीवी, रेडियों सब मिलकर क मोबाइल बना जिसमें नेटर्वकिंग का सारा काम होता हैं। लेकिन समाज में कुछ ऐसे लोग है जो सोशमीडिया का गलत तरीके से प्रयोग कर है। लोगों में कामवासना इर्ष्या दोष सभी की पूर्ति बड़े ही आसानी से सोशल मीडिया पर हो जाती है। गलत मानसिकता के व्यक्ति उसका हमेशा गलत प्रयोग करता है। और वे देखते भी है। वैसे दृश्य को और शेयर भी करते है जिससे वह सोशल मीडिया पर फैलता है। वहाँ उपस्थित बुढ़े–जवान बच्चे सभी देखते है जिसका प्रभाव हमारे समााज पर पड़ रहा है। ऐसे दृश्यों पर रोक लगाना जरूरी है।

प्रस्तावित विषय की उपादेयता :–

हिंदी पत्रकारिता के चर्चित पत्रकार सुधीश पचौरी, सुमित मोहन और मुकेश कुमार जैसे– पत्रकारों को पढ़कर हम मीडिया के प्रभाव को विस्तृत रूप से जान सकते है। यही कारण है कि देश भर के विश्वविद्यालय में उनके पत्रकारिता पर अनेकानेक शोध हो चुके हैं। फिर भी उनके

उपन्यासों के बहुआयामी कथ्य का स्पष्टीकरण बाकी है। जिसके कारण यह शोध–कार्य अपना महत्व रखता है तथा इस विषय पर शोध–कार्य करने की जरूरत है।

पूर्व में किये गये शोध–कार्य :–

सर्वविदित है कि पत्रकारिता पर अनेक शोध–कार्य किये गये है पर बाजारवाद और संस्कृति के संदर्भ में हिंदी पत्रकारिता का भारतीय समाज पर प्रभाव पर कार्य सही रूप से नहीं किया गया है। अत: प्रस्तावित विषय को कथ्य बनाकर शोध–कार्य किया जा सकता है।

शोध का आधार ग्रंथ :–

1) इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता– अजय कुमार सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2) पत्रकारिता : मिशन से मीडिया तक– अखिलेश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3) न्यू मीडिया इंटरनेट की भाषायी चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ– आर० अनुराधा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4) संचार का मूल सिद्धांत– ओम प्रकाश सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5) कसौटी पर मीडिया– मुकेश कुमार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6) मीडिया, जनतंत्र और आतंकवाद– सुधीश पचौरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7) नए जनसंचार माध्यम और हिंदी– सुधीश पचौरी, अचला शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8) टेलीविजन की भाषा– हरीशचन्द्र बर्णवाला, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

9) टीआरपी टीवी न्यूज और बाजार– मुकेश कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

10) हिंदी विज्ञापन : संरचना और प्रभाव–सुमित मोहन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

11) पॉपूलर कल्चर के विमर्श– सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

12) मीडिया लेखन– सुमित मोहन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

13) ‘तू देख तमाश टी०वी० का’– सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

पत्र-पत्रिकाएँ :–

1) आजकल– सम्पादक– सीमा ओझा

2) वागर्थ– सम्पादक– शम्भुनाथ

3) कथादेश– सम्पादक– हरिनारायण

4) आलोचना– सम्पादक–अरुण कमल

5) नया ज्ञानोदय– सम्पादक लीलाघर मंडलाई

6) तभ्दव– सम्पादक– आखिलेश, लखनऊ

7) पाखी– सम्पादक– प्रेम भारद्वाज, नई दिल्ली

8) अस्मितादर्श– सम्पादक– विमलकृति, नागपुर

9) शुक्रवार साहित्यक विशेषांक– अबरीश कुमार

10) प्रभातखबर (साहित्यक विशेषांक)– हरिवंश

11) युद्धरत आम आदमी– रमणिका गुप्ता

अन्य स्रोत :–

शोध–प्रविधि :–

इस शोध–प्रबंध में निम्नलिखित प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा

1) आगमन प्रविधि

2) निगमन प्रविधि

3) विश्लेषणात्मक प्रविधि

4) संश्लेषणात्मक प्रविधि

5) विवेचनात्मक प्रविधि

6) साक्षात्कार प्रविधि

साक्षात्कार प्रविधि की व्याख्या निम्नलिखित है। एक पत्रकार का साक्षात्कार बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि कितने सूचना की जानकारी उन्हें प्राप्त है। उन सूचना को वे किस तरह लोगों के समाने प्रस्तुत करते हैं। पत्रकारिता का बेहद खुबसूरत प्रस्तुतीकरण एक पत्रकार ही दे सकता है।

शोध की पूर्व कल्पना :–

प्रस्तावित विषय– “बाजारवाद की संस्कृति और हिंदी पत्रकारिता का भारतीय समाज पर प्रभाव” के कथ्य के माध्यम से विषय के महत्व का निर्धारण करते हुए पत्रकारिता का वैविध्यपूर्ण कथ्य का मूल्यांकन करने की योजना है। वैश्वीकरण और उदारीकरण ने पत्रकारिता के नये स्वरूप ‘वेब मीडिया’ अथवा ‘ऑनलाइन मीडिया’ को जन्म दिया। मीडिया के इस स्वरूप ने निश्चित रूप से भारतीय समाज की दशा और दिशा को समझने में महत्ती भूमिका निभाई है। प्रस्तुत शोध–विषय भारतीय समाज और हिंदी पत्रकारिता को समझने में यथासंभव महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तावित अध्याय :–

इस शोध–प्रबंध में निम्न अध्याय होंगे–

भूमिका

अध्याय– 1 : हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूप

अध्याय– 2 : पत्रकारिता का उद्देश्य और विकास

अध्याय– 3 : बाजारवाद की संस्कृति और मीडिया

अध्याय– 4 : बाजारवाद की संस्कृति का हिंदी समाज पर प्रभाव

अध्याय– 5 : बाजारवाद के दौर में हिन्दी पत्रकारिता की संभावनाएँ

उपसंहार

शोध निर्देशक

डॉ० बिन्दु चौहान
सहायक प्राचार्य
हिन्दी-विभाग
सी०एम० कॉलेज, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञा :

खुशबु कुमारी
पिता– स्व० महादेव भगत
मु०– रहमगंज, दरभंगा
पो०– लालबाग, जिला– दरभंगा
पिन– 846004 (बिहार)
पैट क्रमांक– 22090180